7

कृति-कीर्तन

ये दोनों संगीत विधायें सभा गानं के अंतर्गत आती हैं, जो केवल मंच प्रदर्शन के लिये प्रयुक्त होती हैं। कृति के तीन मूल भाग होते हैं, यथा, पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणं। श्री मुत्तुस्वामी दीक्षितर की कुछ रचनाओं में, जिन्हें समष्टी चरणं कहते हैं, केवल पल्लवी और चरण होते हैं। कृति संगीत विधा में चित्तस्वर, स्वर साहित्य, मध्यमकला साहित्य, सोलकुट्टु स्वर जैसे कुछ सजावटी अंग होते हैं। बाद के संयोजकों द्वारा अधिक कृतियों की रचना होने से इस संगीत विधा का और अधिक प्रचलन हुआ तथा आधुनिक सभा गान के प्रतिरूप का उद्भव हुआ।

आज के समय में, संगीत सभाओं में सर्वाधिक प्रचलित संगीत विधा कृति है। अन्नमाचार्य, भद्रचल रामदास एवं अन्य द्वारा रचित सरल रचनायें जिनमें संगति तथा अन्य सजावटी अंग नहीं होते हैं, कीर्तन कहलाती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात विद्यार्थी:

- राग का ज्ञान बढ़ा पायेगा;
- गमकों को पूर्ण रूप से प्रस्तुत कर पायेगा;
- एक रचना के सजावटी अंगों के परिचय का वर्णन कर पायेगा;
- मनोधर्म संगीतं को पहचान पायेगा।

7.1 रागलक्षणं

रागं भौली

15वें मेल — मायामालवगौल जन्य

आरोहनं- — स रि$_1$ ग$_2$ प ध$_1$ सं

अवरोहनं- — सं नि$_2$ ध$_1$ प ग$_2$ रि$_1$ स

वादी: गंधारं

संवादी: धैवतं

संचारं

ग प ग रि स, – निछ धछ धछ स रि ग, ,– ग रि ग प ध प,
ग प ध सं नि ध, – ग प ध प ग प ग रि स नि ध स रि ग प ध सं नि ध,
पधसं,, , – धसंरिंगंरिंसंनिध, – निधप,, – धपगपगरि, – स निध, ,– स, , ,

रागं : भौली **तालं. रूपकं**

पल्लवी

श्री पार्वती परमेश्वरौ वन्देचिद बिंबौ लीला विग्रहौ ममाभिष्ट सिद्धये

समष्टी चरणं

आपदा मस्तकालंकरौ आदिमध्यांत रहित करौ
सोपान मार्ग मुख्य धरौ सुखप्रदौ गंधार सधारौ

मध्यम कलां

लोपमुद्रे सरचित चरणौ लोभ मोहादि वरण करनौ
पाप पह पंडित तार गुरुगुहा करणौ भय हरणौ
भाव तनौ

रागं : भौली **रचयिता: मुत्तुस्वामी दीक्षित**
तालः एक **आरोहनं- स रि ग प ध सं**
अवरोहनं- सं नि ध प ग रि स

पल्लवी

// ध, , ,प, , ,ध प ध ग,ध प ,ग प ग रि स, // ,स, स नि ध प ध , // स, , ,स,स रि ग रि ग ग प, //

श्री पा , ,र्व ती प र मे , , सव, रौ , , , व , , न्दे , , , चिदबिंबौ लीला ध ,ध प ,ध, प,ग प ग रि ग प, //

2. ---- वही ---- ग प ध सं, // सं नि ध, ध प, ----वही---- //

विग्रहौ ममाभिष्ट सिद्धये ---- वही ---- ली ला , ,वि , ,ग्रहौ ---- वही ---- //

टिप्पणी

समष्टी चरणं

// ग , ,प, ,ध, , , ,प ,ध प, ग , ,प रि, , , स, रि ग, , , ग , , , ग प रि, ग रि
स, , , सनि ध//

आ , प, दा, , मस्तका , , लं , ,क , रौ , , आ , , दि म, ,ध्यां , त

// ,स रि ,ग प ग रि ग ,प ,ग प ध,प, , , ग, ,प, ,ध, , , ,प,ध प ग ,प ध सं,सं, , ,सं,
,रिं गं रिं गं, रहि त , , , क , , , रौ, सो , , पा,न , , ,मा र्ग मु ख्य, , ध , रौ, ,

// रिं, सं ,नि , ध , , , ,ध प ग, ध, प ग ग प ध प ग प ध प ग, रि, स//

सु ख प्र दौ , , गं , धा र स धा , , रौ,

मध्यमकलां

॥ स,नि, ध ,प ,प ध स रि ग ग प, प ध प प ध ग ग, ग ,प ध स रि स, ॥
लो प मुद्रे सर , चित चर णौ लो भ मो हा , दि, व रण क र नौ

॥ ग, ग ,प ध प ध सं रिं सं रिं गं पं गं रिं सं ,सं सं नि ध प, ग प ग रि ग प ॥
पा , प , पह पं डित तार गुरु गुहा करणौ भय हरणौ भाव तनौ

7.2 रागलक्षणं

रागः मायामालवगौल

15वां मेल

आरोहनं- स रि ग म प ध नि स

अवरोहनं- सं $नि_2$ $ध_1$ प $म_1$ $ग_2$ $रि_1$ स

वादी: – गंधारं

संवादी – निषादं

संचारं

प ध प म ग रि ग, , , – म ग रि, स, – स नि ध ,– स रि ग रि ग,

– ग म प ध नि ध ,प, – ध ध प म ग रि ग म प ध नि, , सं, , – –

सं रिं ,गं मं गं रिं गं, ,– मं गं रिं ,सं, – ध नि सं रिं सं नि ध, प,

–ग म प ध नि सं नि ध प, – ध ध प म ग रि ग, , – म ग रि, स, , ,

रागः मायामालवगौल **तालः** रूपकं

पल्लवी

तुलसीदलमूलच एषं संतोष मुख पूजिंतु

अनुपल्लवी

पलुमरु चिरकालमु परमातमुनि पदमुलनु

चरणं

सरसिरुहन्नगचंपकपटलकुरवक
करवीरमालिकासुगंधरजसुमौलु
धरनीवियोक पर्यायमुधर्मतुमुनिसकेत
पुरवसुनि श्री रमुनि वर त्यागराजनुतुनि

मायामालवगौल **रचयिता त्यागराज**

तालः रूपकं **आरो- स रि ग म प ध नि सं,** **अव- सं नि ध प म ग रि स**

पल्लवी (1) // प ध प,ग म प म ग, मगरि, स, // स रि ग रि ग, प, , प प म ग म,
तुल सी, द ल मू ल च, , , एषं संतोष , मु ख पू ,जिं , , , ,तु

(2) // --वही-- // निधपमग, म ग रि, स, // --वही-- // गमप ध प ध प प म ग म,
तुलसी दल मू, ल, च, , , , एषं संतोष मु ख पू , , , , , जिं , , , तु

(3) //सं नि ध,नि ध प,ध ध प म --वही--//(4) स रि ग म प ध नि सं ,,, //,सं नि ध,नि ध प,ध ध पम // तुल सी, द ल मू ल च, , ,एषं संतोष ,मु ख पू ,जिं, ,तु,,

अनुपल्लवी **(तुलसी)**

(1) // सं नि ध,ध नि सं, // सं रिं , सं रिं सं, रिं सं // (2) --वही-- // सं रिं गं ,मं गं पं मं रिं, सं,
प , लु म , , रु चि र का ल मु प , लु म , , रु चि,र, का , , , ल , मु
// सं रिं सं, सं नि ध, प , ,ध म , ग म प (प ध नि)
प र मा, तमु नि प, द मु ल नु (मु ल नु) (तुलसी)

चरणं

प ध प , प प, म ध प प म, ग म ग म ग रि स स स रि ग , म ग प म ग,
स र सि, रु ह प , न्न, , , ग , चं, प क प , ट , ल , कु र व, क

टिप्पणी

निध सं नि सं रिं संनिनिधप,धपमगम, ग,ममगरि,स, ग म ध प म ग म ग रि स,
क र वी , र मा, ,लि, का,,, सु गं ,ध र , , ज, सु, मौ , लु , , ,

ध सं निधपप ,म ध प पम,गम सं नि ध,ध नि सं,सं रिं सं , सं नि सं रिं सं,
ध र नी वि यो क प र्या ,,,, य मु ध , , , र्म, तुमु नि स, के, , , त

सं रिं गं,मंगंपंमंरिं,सं, सं,सं, रिं सं सं रिं सं, नि ध प , , ध म, प ध नि
पु, र व,,,,सु ,निश्री र, मु नि व र त्या , , गरा, ज, , नु तु नि

(तुलसी)

7.3 रागलक्षणं

रागं: मोहन कल्याणी

65वें मेल मेच कल्याणी जन्य

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ प ध$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ ध$_2$ प म$_2$ ग$_2$ रि$_2$ स

वादी: गंधारं संवादी: निषादं

संचार

ग ,प ध सं नि ध प, , , - प म ग रि स, ,- स रि ग रि स नि ध ,-
ध स रि ग प, म ,ग, रि- ग प ध सं नि ध प, ,- प ध, , , सं , , ,- -
नि ध सं रिं गं रिं सं, ,- ध गं रिं सं नि ध ,प, , - प ,म ग, रि, - -
ग , रि स, ,- -

रागं: मोहन कल्याणी **तालं: आदि**

पल्लवी

सेवे श्री कान्तं वरदं

अनुपल्लवी

देवरादि समूह कृतंतं
दीन पालन परम स्मरकांतं

चरणं

स्यानंदुर पुरमाल दीपं
सारसक्श मकरालि दुरपं

टिप्पणी

भानु शशांक दृशं वसुधापं
पद्मनाभ मवितर्य सुधापं

मोहन कल्याणी **रचयिता: स्वाति तिरुनल महाराज**

तालं: आदि **आरो- स रि ग प ध सं, अव- सं नि ध प म ग रि स**

(1) , , रि ग, स, ,स नि ध , , , ग रि ग , , , , ग , प म ग रि ग, रि,
सेवे श्री कान्तं वरदं --वही-- कान्तं वरदं

(2) --वही-- ग , , , - ग प ध सं नि ध प म
--वही-- कान्तं वरदं

(2) ग रि-रिग, स,,स निध,, ,म ग रि, प म ग, सं नि ध,धगं रिं सं नि ध प म ग रि
, ,-से, वे , श्री , का, , न्तं, , , , व र , , , दं , ,

अनुपल्लवी (सेवे श्री कान्तं)

(1) , , ग, , प ध, सं, , , सं सं सं नि ध, रिं सं, सं, , , , नि ध प म
दे व रा, दि स मू, ह कृ तं तं,

(2) ग --वही-- प ध सं रिं गं ,रिं , सं , , , , नि ध प म
--वही-- मू, ह कृं तं तं,

(3) ग, -ग, , प ध, सं नि ध प सं, सं, प ध सं रिं गं ,रिं, सं रिं गं रिं सं , , ,नि ध प म
, , - दे, व, रा, , , , दि स मू, ह कृ तं , , तं, ,

(1) ग , - ध गं रिं सं, , सं नि ध प , प म ग ,ध, प ग, प म ग रि ग,
, ,-दी न पा , ल न प रम, , स्म र कां, तं, ,

(2) रि,-गं रिंसं नि ध रिं सं निध, प,धपधसं रिं गं रिं सं रिं सं निधपम-ध प म ग रि
, ,- दी न पा , ल न प रम, , स्म र कां, , , ,- तं , ,

(सेवे श्री कान्तं)

चरणं

रि ग, स, , स नि ध ग रि, ग, , , ध, प, ध ध प म ग रि ग ग
- स्या, नं , , दु र पु र , , माल , दी , , , पं

रि,- स, , रि ग, , , प ध, ध, ग प ध सं नि ध प म ध ध प म ग रि ग रि
, , - सा र स क्ष म क रा , , , लि , ,दु र , , ,पं , ,

टिप्पणी

भानु शशांक दृशं वसुधापं : अनुपल्लवी के समान

पद्मनाभ मवितर्य सुधापं

पाठगत प्रश्न

1. सामान्यतया कृति में कितने भाग होते हैं?
2. कृति के जिस भाग में जाति और स्वर साथ होते हैं उसका नाम बताइये।
3. 'तुलसी दल' कृति के रचयिता का नाम बताइये।
4. भौली के जनक राग का नाम बताइये व प्रस्तुत करिये।

निर्देशित कार्य कलाप

1. संगीत सभाओं में जायें और दिये गये तीन रागों में अन्य प्रचलित कृतियों को एकत्र करें।
2. प्रत्यक्ष सभाओं, सी डी, रडियो टी वी कार्यक्रम सुनकर सजावटी अंग युक्त अधिक से अधिक रचनायें एकत्र करें।